अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

पवनदूती काव्य में राधा का चरित्र–चित्रण

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

हिन्दी के कवि, निबन्धकार तथा सम्पादक अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदे"ा के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान पर 15 अप्रैल सन 1865 को हुआ। इनके पिता जी का नाम पंडित भोलानाथ उपाध्याय व माता जी का रूक्मिणी देवी था। पांच वर्ष की आयु में इनके चाचा ने इन्हें फारसी पढ़ाना शुरू कर दिया था। 17 वर्ष की आयु में इनका विवाह निर्मला कुमारी के साथ हुआ। अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत और फारसी आदि भाषा का अध्ययन घर पर ही किया। हरिऔध जी ने निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापन का कार्य किया। का"ाी हिंदू वि"वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अवैतनिक ि"ाक्षक के रूप में अध्यापन कार्य किया। अध्यापन कार्य से मुक्त होने के बाद साहित्यिक सेवा में 'हरिऔध' जी ने ख्याति अर्जित की। 'प्रिय–प्रवास' रचना पर हिन्दी का सर्वोत्तम पुरस्कार 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक से सम्मानित किया गया। यह खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। उपाध्याय जी प्रारम्भ में बृज भाषा में कविता किया करते थे, परन्तु महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से ये खड़ी बोली के क्षेत्र में आए और खड़ी बोली को नया रूप प्रदान करते हुए नवीन दृष्टिकोण से अपने विचार प्रस्तुत किए। अनेक वर्षों तक साहित्य साधना में रत रहने वाले 'हरिऔध' का निधन सन् 1947 में हो गया।

हरिऔध जी की रचनाओं में देशसेवा, समाज सेवा तथा राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ प्रखर रूप में विद्यमान हैं। द्विवेदी कवियों में इन्हें बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है– हरिऔध जी ने पद्य और गद्य, दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं।

1. महाकाव्य दृ प्रियप्रवास, वैदेही–वनवास।
2. मुक्तक काव्य दृ चोखे–चौपदे, चुभते–चौपदे, रस–कलश, बोलचाल, पद्य–प्रसून, कल्पलता, प्रेमाम्बु–प्रवाह, प्रेम–पुष्पोपहार,ऋतुमुकुट' प्रेम प्रपंच, काव्योपवन,उद्बोधनआदि।
3. आलोचनात्मक ग्रन्थ दृ हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, कबीर–वचनावली की आलोचना, रस–कलश आदि की भूमिकाएँ।
4. उपन्यास दृ ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल, प्रेमकान्ता, 'वेनिस का बाँका'।
5. नाटक–प्रद्युम्न–विजय, रुक्मिणी परिणय।

'प्रियप्रवास' महाकाव्य में 'पवनदूती' नामक रचना संकलित है। 'पवनदूती' नामक काव्य में पवनदूती प्रसंग की योजना वि"ोष सन्दे"ा की अभिव्यक्ति हेतु की गई है। उपाध्याय जी ने 'पवनदूती' काव्य में राधा की विरह द"ाा को चित्रित करते हुए राधा के चरित्र की महानता एवं उदारता को उजागर करने का प्रयास किया है। 'राधा' चरित्र के माध्यम से परोपकारी भावना को प्रतिपादित करना काव्य का प्रमुख सन्दे"ा है। 'पवनदूती' प्रसंग की योजना भ्रमरगीत योजना से कुछ पृथक है, जो काव्य को मौलिकता एवं नवीनता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

प्रदान करते हुए राधा की विरह–वेदना, वाकपटुता, बुद्धिमता के साथ–साथ लोक–कल्याण की भावना को अभिव्यक्ति करती है। राधा को परोपकार की साकार मूर्ति के रूप में वि"व–प्रेमिका एवं वि"व–सेविका रूप में चित्रित किया गया है। जिससे राधा काव्य की प्रमुख पात्र बन गई है। पवनदूती काव्य में राधा का चरित्र कृष्ण की अपेक्षा अधिक स"ाक्त होकर उभर कर आता है। इसलिए 'पवनदूती' काव्य की प्रमुख पात्रा के रूप में पहचानी जाती है।'पवनदूती' काव्य में राधा के चरित्र–चित्रण की वि"ोषताएं इस प्रकार से हैं–

कृष्ण के मथुरा चले जाने से राधा अत्यधिक व्यथित हैं। मथुरा जाकर कृष्ण पुनः लौटकर नहीं आता जिससे राधा खिन्न हो जाती हैं। प्रातः कालीन पवन फूलों की खु"ाबू व जल की शीतल बूँदों को साथ धारण करके खिड़कियों के झरोखों से राधा के घर में प्रवेश करती हैं। पवन ने राधिका के दुख को दूर करने का प्रयास किया, परन्तु पवन की प्रेम क्रीड़ाओं से राधा का दुःख बढ़ता ही जा रहा है। राधिका को पवन की सुखद क्रीड़ाएँ तनिक भी सुखद प्रतीत नहीं हो रही थी अपितु एक शत्रु के समान लग रही थी। श्रीकृष्ण मधुरा जाकर पुनः लौटकर नहीं आए जिससे राधा कृष्ण की प्रतीक्षा में विरह–विदग्ध हो गई। वह चातक पक्षी के समान खिन्न भाव से कृष्ण की राह ताकती। राधिका के संतापों को बढ़ता देख कर पवन के मन में राधिका के लिए सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है। वह राधिका के तन–मन की की पीड़ा को दूर करने का प्रयास करती है। यथाः उसकी पीड़ा का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि–

''नाना चिंता सहित दिन को, राधिका थी बिताती।
आंखों को थी सजल रखती, उन्मना थी बिताती।
शोभावाले जलद–वपु की, हो रही चातकी थी।
उत्कंठा थी परम प्रबला, वेदना वर्द्धिता थी।।''[1]

राधा बहुत बुद्धिमान है। वह अपने दुख से अत्यधिक दुखी है। वह अपने दुख को दूर करने के लिए पवन को दूती बनाकर कृष्ण के पास अपना सन्दे"ा भेजती है। राधा विवेक से निर्णय लेने की क्षमता रखती है। वह विवेक से ही पवन की क्षमता को पहचानते हुए कि पवन सब स्थानों पर जाने में सक्षम है, उसे दूती बनाकर कृष्ण के पास भेजती है।

''मेरे प्यारे नव जलद से, कंज से नेत्रवाले।
जाके आए न मधुबन से, औ न भेजा सँदे"ा।।
मैं रो रो के प्रिय–विरह से, बावली हो रही हूं।
जा के मेरी सब दुःख कथा श्याम को तू सुना दे।''[2]

पवन ने राधिका के दुःख को अपनी शीतलता व सुगन्ध से कम करने का प्रयास किया। राधिका के घर में प्रवे"ा करते ही पवन राधिका के दुःख को समझ गई। राधिका के सन्ताप को देखकर पवन के मन में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

राधिका के लिए सहानुभूति उत्पन्न हुई। पवन ने अपनी खु"बु, शीतलता व कोमलता से राधा के तन–मन की पीड़ा को दूर करने का प्रयास किया।

''आके पूरा सदन उसने सौरभीला बनाया।
चाहा सारा कलुष तन का राधिका के मिटाया।
जो बूंदे सजल दृग के, पक्ष्म में विद्यमाना।
धीरे–धीरे क्षिति पर उन्हें सौम्यता से गिराया।।''[3]

राधा को पवन की प्रेम क्रीड़ाएँ तनिक भी अच्छी नहीं लग रही थी अपितु उसका दुःख बढ़ता ही जा रहा था। उसके मन की वेदना और भी अधिक बढ़ती जा रही थी। भगवान श्री कृष्ण की अनुपस्थिति में राधा को पवन की सुगन्ध, शीतलता एक शत्रु के समान प्रतीत हो रही थी। पवन की क्रियाएं कृष्ण की यादें और अधिक बढ़ा रही थी। कवि राधा की विरह व्यथा का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''श्री राधाको यह पवन की प्यार वाली क्रियाएं।
थोड़ी सी भी न सुखद हुई, हो गई वैरिणी सी।
भीनी–भीनी महक सिगरी, शांति उन्मूलती थी।
पीड़ा देती परम चित को वायु की स्निग्धता थी।।''[4]

राधिका इस तथ्य से अवगत है कि पवन की मं"ाा उसके दुःख को बढ़ाने की नहीं है अपितु उसके दुःख को कम करना चाहती है। पवन की सहानुभूति से राधिका समझ गई कि पवन उसकी हितैषी है। वह उसके दुःख को दूर करना चाहती है। पवन के अपनेपन व मधु व्यवहार से राधा उसे अपना दूत बनाने का मन बना लेती है। वह उसे अपनी चिर–परिचिता एवं प्रिया समझते हुए पवन को सम्बोधित करते हुए कहती है कि–

''क्यों होती है निठुर इतना, क्यों बढ़ाती व्यथा है।
तू है मेरी चिर परिचिता, तू मेरी प्रिया है।
मेरी बातें सुन मत सता, छोड़ दे वामता अपनी को।
पीड़ा खो के प्रणातजन की, है बड़ा पुण्य होता।।''[5]

राधा अपने विरह से व्यथित है। वह दूसरों की पीड़ा के समक्ष अपनी व्यक्तिगत खिन्नता की परवाह नहीं करती। यहीं कारण है कि राधा पवन को निर्दे"ा देती है कि जब वह श्रीकृष्ण के पास राधा के संदे"ा को लेकर जाए तब यदि रास्ते में अन्य व्यथित–पीड़ित प्राणी मिल जाए। तब पवन उस प्राणी के दुख–पीड़ा को सर्वप्रथम दूर करे। राधिका का पवन को यह निर्दे"ा यहीं सन्दे"ा देता है कि मानव को अपने स्वार्थ को त्यागकर मानवता के कल्याणार्थ कर्म करने चाहिए। यथा–

''जाते–जाते अगर पथ में, क्लांत कोई दिखावे।
तो तू जाके निकट, उसकी क्लान्तियों को मिटाना।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

धीरे–धीरे परस करके, गात उत्ताप खोना
सद्गंधों से श्रमित जनों को, हर्षितों सा बनाना।।''[6]

राधा का यह प्रेम मात्र मानव प्रेम तक सीमित नहीं है अपितु प्रकृति प्रेम के रूप में भी अभिव्यक्ति हुआ है। राधा अपनी दूती पवन को निर्दे"ा देती है कि उसकी गति से किसी भी पेड़–पौधे या पक्षी को हानि न पहुँचे। इसलिए वह सहज भाव से क्रीड़ाएँ करने के लिए पराम"र्ा देती है। प्रकृति संरक्षण का सन्दे"ा देते हुए कवि राधा के माध्यम से कहते हैं कि–

''प्यारे प्यारे तरु किसलयों को, कभी जो हिलाना।
तो तू ऐसी मृदुल बनना, टूटने वे न पावें।
शाखापत्रों सहित जब तू, केलि में लग्न होना।
तो थोड़ा भी न दुख पहुंचे, पक्षि के शावकों को।।''[7]

राधा पवन को कृषक बालाओं की तपन एवं थकावट को दूर करने के लिए अनुरोध करती हुई कहती है कि यदि कृषक बाला जेठ माह की भीष्ण गर्मी में काम करने के कारण तपन से पीड़ित हो रही हो तो तुम मेरे दुःख को भूल कृषक बाला को छाया प्रदान कर शीतलता देना। राधिका के मन में कृषक बाला के प्रति सहानुभूति है।

''कोई क्लान्ता कृषक ललना, खेत में जो दिखावे।
धीरे–धीरे परस उसको, क्लांति सर्वांग खोना।
जाता कोई जलद यदि हो, व्योम में तो उसे ला।
छाया सीरी सुखद करना, शीश तप्तांगना के।।''[8]

वाणी का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। इसी महता को स्वीकार करते हुए राधिका श्री कृष्ण की मिष्ट वाणी को लाने का आग्रह पवन से करती है। राधा को पता है कि कृष्ण की मधुर वाणी से उसके व्यथित चित को आनंद की प्राप्ति होगी। राधिका का ह्रदय जो सूखे रेगिस्तान के समान सारहीन बंजर तुल्य है, कृष्ण का मधुर स्वर उसके सूखे ह्रदय में प्रसन्नता का संचार कर देता है।

''तू प्यारे का मृदुल स्वर ला, मिष्ट जो है बड़ा ही।
ज्यों यों भी है क्षरण करता, स्वर्ग की सी सुधा को।
थोड़ा भी ला श्रवण–पुट में, जो उसे डाल देगी।
मेरा सूखा ह्रदय–तल तो, पूर्ण उत्फुल्ल होगा।।''[9]

राधा श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने से जितनी खिन्न है, उससे कहीं ज्यादा दुःखी इस तथ्य से है कि कृष्ण ने राधा की कु"ाल क्षेम जानने का प्रयास भी नहीं किया है। कृष्ण के उदासीन व्यवहार से राधा के प्रेम में कृष्ण के लिए कोई कमी नहीं आती। वह दिन–रात कृष्ण की याद में खोई रहती है। कृष्ण के वियोग में राधा की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

''कोई प्यारा कुसुम कुम्हला, भौन में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला, डाल देना उसे तू।
यों देना ऐ पवन बतला, फूल सी एक बाला।
म्लान हो–हो कमल पग को, चूमना चाहती है।।''[10]

श्री कृष्ण मथुरा से पुनः लौटकर नहीं आते इसलिए प्रेयसी राधा विरह–विदग्धता से रोते हुए अपने दिन व्यतीत कर रही है। अपनी विरह–व्यथा का सन्दे"ा राधा कृष्ण के पास भेजना चाहती है। अतः वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए पवन को दूत बनाकर कृष्ण के पास भेजती है। राधा पवन को मनोविज्ञान के अनुकूल दूत बनने के लिए प्रेरित करती है और उसे निर्दे"ा देती है जैसे भी संभव है, वैसे ही उपाय अपनाकर वह राधा का कृष्ण से मिलन करवा दे।

''तू जाती है सकल थल ही, वेगवाली बड़ी है।
तू है सीधी तरल हृदया, ताप उन्मूलती है।
मैं हूं जी में बहुत रखती, वायु तेरा भरोसा।
जैसे हो ऐ भगिनी, बिगड़ी बात मेरी बना दे।।''[11]

यमुना का शीतल जल पवन की थकान को दूर करेगा। यमुना जल में छोटी–छोटी लहरें उठाकर पंकजों के साथ खेलने से पवन का मनोरंजन भी होगा और उसे आनंद भी प्राप्त होगा। प्रकृति प्रेमी राधा पेड़–पौधों–पक्षियों आदि की परवाह भी करती है, और पवन का भी ध्यान रखती है। इसलिए वह पवन को यमुना नदी में स्नान करने के लिए भी आग्रह करती है। यथा–

''कालिंदी के पुलिन पर हो, जो कहीं भी कढ़े तू।
छू के नीला सलिल उसका, अंग उत्ताप खोना।
जी चाहे तो कुछ समय लौं, खेलना पंकजों से।
छोटी–छोटी सु लहर उठा, क्रीड़ितों को नचाना।।''[12]

राधा बहुमुखी व्यक्तित्व की धनी है। बुद्धिमान होने के साथ–साथ वाक्–चतुरता के रूप में उनका चरित्र उभारा गया है। वह पवन को आग्रह भी करती है एवं आव"यकतानुसार निर्दे"ा भी देती है। राधा को पता है कि पवन मौखिक अभिव्यक्ति से कृष्ण को संदे"ा देने में असमर्थ है। राधा पवन को समझाती है कि विवेक से कार्य करते हुए सांकेतिक भाषा में वह राधा के दुःख का समाचार कृष्ण को दे। इसके लिए उसे जो भी उपाय करने पड़े, वह करें। परन्तु कृष्ण को राधा की यथार्थ स्थिति से अव"य अवगत कराएं।

''तेरे में है गुण जो, व्यथाएँ सुनाए।
तू कामों को प्रखर मति, औ युक्तियों से चलाना।
बैठे जो हों सदन अपने, मेघ सी कांतिवाले।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

तो चित्रों को इस भवन के, ध्यान से देख जाना।।''[13]

राधा श्री कृष्ण के प्रेम रस में मग्न है। वह श्री कृष्ण के रूप–सौन्दर्य पर इतनी आसक्त है कि वह उनकी तरफ खींची चली जाती है। यद्यपि कृष्ण से उसे उपेक्षा ही मिली है। परन्तु वह इन सबकी परवाह नहीं करती। वह उसी प्रकार उनसे प्रेम करती है जब कृष्ण राधा के साथ थे। पवन को दूती बनाकर जब वह श्री कृष्ण के पास संदे"ा ले जाने का आग्रह करती है उस वक्त राधा पवन को कृष्ण के सौम्य एवं अपूर्व सौन्दर्य के विषय में बताते हुए कहती है कि–

''तू देखेगी जलद–तन को, जो वहीं तद्गता हो।
होंगे लोने नयन उनके, ज्योति उत्कीर्णकारी।
मुद्रा होगी वर वदन की, मूर्ति सी सौम्यता की।
सीधे–सीधे वचन उनके सिक्त पियूष होंगे।।''[14]

अन्यत्र स्थल पर राधिका कृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए पवन को कहती है–

''सांचे ढाला सकल वपु है, दिव्य सौंदर्य वाला ।
सत्पुष्पों से सुरभि उसकी, प्राण संपोषिका है ।
दोनों कंधे वृषभ वर से, हैं बड़े ही सजीले ।
लंबी बांहें कलभ कर–सी, शक्ति की पेटिका हैं।।''[15]

प्रेम में सब सुन्दर ही सुन्दर लगता है। प्रेम में सब अच्छा ही अच्छा अनुभव होता है। प्रेम में सात्विकता व दिव्यता इतनी अधिक होती है कि प्रेमी से बढ़कर कोई दूसरा नहीं लगता। उसके समक्ष सब फीका ही फीका लगता है। कृष्ण तेजस्वी व य"ास्वी थे, इसमें सं"ाय नहीं है। प्रेयसी राधिका के साथ छल होने पर भी उसे कृष्ण का रूप–सौन्दर्य बहुत भाता है। यथा–

''बैठे होंगे जिस थल वहां, भव्यता भूरी होगी।
सारे प्राणी वदन लगते, प्यार के साथ होंगे।
पाते होंगे परम निधि औ, लूटते रत्न होंगे।
होती होंगी हृदय–तल की क्यारियां पुष्पिता सी।।''[16]

'पवनदूती' कविता की महत्वपूर्ण वि"ोषता है मानवीय प्रेम। राधा अपने दुःख की तनिक भी परवाह न करते हुए मानवीय प्रेम को प्रतिष्ठित करने के उद्दे"य से पवन को कहती है पथ में रोगी, किसान बाला, पेड़–पौधे एवं पक्षी सभी की सहायता करते हुए वह कृष्ण के पास जाएं। कृष्ण को राधा की विरह–व्यथा से परिचित कराकर कृष्ण को वापिस राधा के पास ले आना। यदि हे पवन आप ऐसा करने में असमर्थ हो अर्थात् यदि कृष्ण मथुरा छोड़कर वापिस राधा के पास आने में आना–कीनी करें तो कृष्ण के चरणों की धूल लाने का निवेदन राधा पवन से करती है। राधा श्री कृष्ण के चरणों की धूलि प्राप्त करके अपने व्यथित चित को शान्त करने का प्रयास करेंगी। राधा पवन को कहती है कि यदि ऐसा भी संभव न हो

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

तो श्री कृष्ण की सुगंध को लाकर देने का अनुरोध करती है। यदि ये कार्य भी करने में पवन असमर्थ है तो राधा पवन से श्री कृष्ण के श्वेत बिन्दु की पुष्पमाला का फूल लाने का आग्रह करती है। राधा जीवित होते हुए भी मृत ला"ा के समान है। उसके जीवन की अन्तिम आ"ा यहीं है कि यदि पवन उपर्युक्त विवेचित कार्यों को करने में असमर्थ है तो कम से कम श्री कृष्ण के चरणों का स्प"र्ा करके लौट आए। राधा पवन को गले लगाकर श्री कृष्ण की अनुभूति कर लेगी। राधा की मृत देह में जीवन का पुनः संचार हो जाएगा।

''पूरी होंवें न यदि तुझसे, अन्य बातें हमारी।
तो तू, मेरा विनय इतना, मान ले औ चली जा।
छू के प्यारे कमल–पग को, प्यार के साथ आ जा।
जी जाऊंगी हृदय तल में, मैं तुझी को लगा के।।''[17]

निःसन्देह राधा का श्री कृष्ण के प्रति प्रेम एकनिष्ठ है। राधा विरह–विदग्धा की पीड़ा से पीड़ित होते हुएभी परहितकारी तथा मानवीय है। वह विवेक, वाक्–चातुर्य से पवन को दूती बनाकर श्री कृष्ण के पास प्रेम संदे"ा पहुँचाने का प्रयास करती हुई मानव कल्याण का संदे"ा देती है।

संदर्भ सूची–

1. 'आधुनिक हिन्दी कविता' : डॉ० सरिता वार्ि"ाष्ठ, प्रका"ान विभाग, कुरूक्षेत्र वि"वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, पृ० 3
2. वहीं, पृ० 4
3. वहीं, पृ० 3
4. वहीं, पृ० 3
5. वहीं, पृ० 4
6. वहीं, पृ० 5
7. वहीं, पृ० 6
8. वहीं, पृ० 6
9. वहीं, पृ० 11
10. वहीं, पृ० 9
11. वहीं, पृ० 4
12. वहीं, पृ० 5
13. वहीं, पृ० 9
14. वहीं, पृ० 7
15. वहीं, पृ० 8
16. वहीं, पृ० 8
17. वहीं, पृ० 11